13. नीति के दोहे

स्वाध्याय

रहीम के अनुसार संपति का महत्व क्या है ?

- रहीम के अनुसार संपति का यहा महत्व है की उससे दूसरों का भला होता है |

छोटों का तिरस्कार क्यो नही करना चाहिए ?

- छोटों का तिरस्कार नही करना चाहिए, क्योंकि जो काम वे करते है, वह बड़े नही कर सकते |

सुई का काम कौन नही कर सकता ?

- सुई का काम तलवार नही कर सकती |

उतम प्रकृति का क्या लक्षण है ?

- उतम प्रकृति का यह लक्षण है की बुराई के बीच रहकर भी वह अपनी अच्छाई नही छोड़ती |

मांगने के बारे में रहीम क्या करते है ?

- रहीमजी कहते है की मांगना मृत्यु के समान है |

वृक्ष और सरोवर के उदाहरण से रहीम हमें क्या समझाते है ?

- वृक्ष अपने फल स्वयं नही खोते | सरोवर अपना पानी स्वयं नही पीते | रहीमजी कहते है की हमें भी इनसे प्रेरणा लेनी चाहिए | अपनी जमा की गई धन-संपती का उपयोग हमे केवल अपने सुख के लिए नही करना चाहिए | हमे उसके द्वारा दूसरों की भलाई भए करनी चाहिए |

रहीम कडवे मुखवाले मनुष्य की प्रकृति को कैसे समझाते है ?

- ककड़ी के फल में कड़वापन होता है | कुछ लोगो की जबान कड़वी होती है | वे हमेशा कडवे बोल ही बोलते है | वे यह नही सोचते की उनकी कड़वी वाणी सुननेवालों को कितनी चोट पाहुचाती है | एसे लोगो का मुंह ककड़ी के मुंह के समान होता है | कटुवाणी बोलकर दूसरे के दिल को चोट

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

पाहुचाना अपराध है | इसलिए ककड़ी का मुंह काटकर उस पर नमक लगाने जैसी सजा ककड़ी को दी जाती है, वैसी ही सजा इन कड़वी जबानवालो को भी देनी चाहिए |

'लाख प्रयत्न करने पर भी बिगड़ी हुई बात नही बनती' ऐसा रहीमजी किस उदाहरण से समझाते है?

- किसी कारण से बात बिगड़ी जाए तो उसे सुधारणा बड़ा मुश्किल होता है | इसे समझाने के लिए रहीमजी फटे हुए दुध का उदाहरण देते है | फटे हुए दुध से जमाए गए दही में मक्खन बनाने की शक्ति समाप्त हो जाती है | फिर उसे कितना भी मथा जाए, उसमें से मक्खन नही निकलता | रहीमजी कहते है की, बिगड़ी हुई बात फटे हुए दुध जैसी होती है | उसे सुधारने के लिए कितने भी प्रयत्न किए जाए, वह नही सुधर पाती |

निम्नलिखित काव्य-पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए |

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारी |

- लोग प्राय: बड़ो को महत्व देते है | समाज में धनीमानी लोंगों को आदर-सम्मान दिया जाता है | गरीबो को लोग उपेक्षा की दृष्टि से देखते है | उपयोगिता की दृष्टि में देखे तो गरीब लोंगों का काम भी कम महत्व का नही होता | किसान, मजदूर तथा छोटे काम करनेवाले देश की बहुमूल्य सेवा करते है, वह ऊंचे तबकेवाले नही कर सकते | इसलिए हमें बड़े लोंगों को मान देते समय निम्नस्तर के लोंगों की उपेक्षा नही करती चाहिए |

निम्नलिखित काव्य-पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए |

चंदन विष व्यापत नही, लपटे रहत भुजंग |

- चंदन के पेड़ पर साप लिपटे रहते है | इसके बावजूद चंदन का पेड़ सापो के विष से प्रभावित नही होता | सांपों के संग से उसकी सुगंधी में कोई अंतर नही पड़ता | इसी प्रकार उतम स्वभाव के लोग बुरी संगीत में रहकर भी उससे प्रभावित नही होते | वे अपने गुणो से अपराधीयो को प्रभावित करके उनका जीवन बदल देते है |

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in